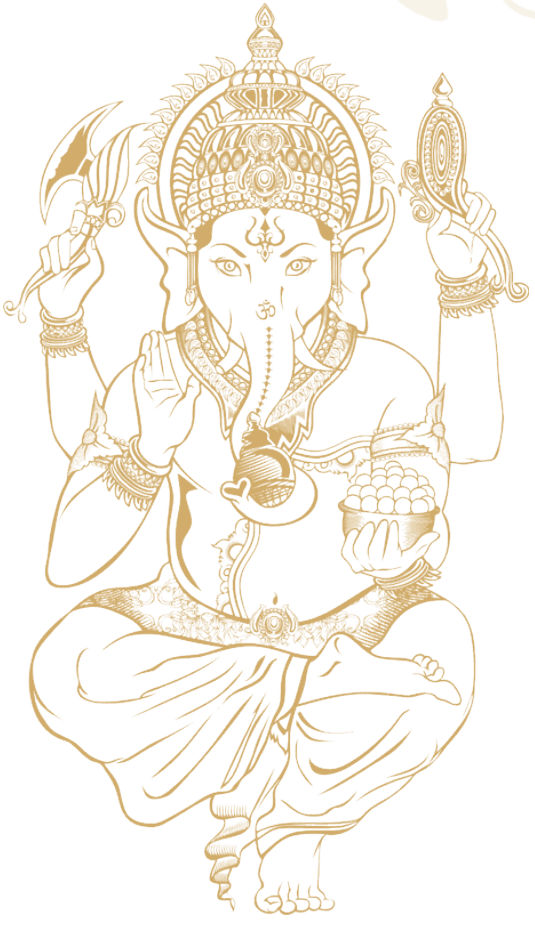

# Raju godara

22 Jun 1982

02:20 AM

Jhunjhunu

**Model: Baby-Horoscope** **Order No: 119645501**

**तिथि** 22/06/1982 **समय** 02:20:00 **वार** मंगलवार **स्थान** Jhunjhunu **चित्रपक्षीय अयनांश** : 23:36:27
**अक्षांश** 28:05:00 उत्तर **रेखांश** 75:30:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:28:00 घंटे

### पंचांग

| | |
|---|---|
| साम्पातिक काल | 19:50:54 घं |
| वेलान्तर | 00:01:49 घं |
| सूर्योदय | 05:32:02 घं |
| सूर्यास्त | 19:27:16 घं |
| चैत्रादि संवत | 2039 |
| शक संवत | 1904 |
| मास | आषाढ़ |
| पक्ष | कृष्ण |
| तिथि | 1 |
| नक्षत्र | आर्द्रा |
| योग | वृद्धि |
| करण | किंस्तुघ्न |

### अवकहड़ा चक्र

| | |
|---|---|
| गण | मनुष्य |
| योनि | श्वान |
| नाड़ी | आद्य |
| वर्ण | शूद्र |
| वश्य | मानव |
| वर्ग | मार्जार |
| युँजा | मध्य |
| हंसक | वायु |
| जन्म नामाक्षर | घ-घनश्याम |
| पाया(रा.-न.) | ताम्र-रजत |
| होरा | गुरु |
| चौघड़िया | चर |

### विंशोत्तरी

**राहु 10वर्ष 11मा 30दि**
**शनि**

**21/06/2009**
**21/06/2028**

| | |
|---|---|
| शनि | 24/06/2012 |
| बुध | 04/03/2015 |
| केतु | 12/04/2016 |
| शुक्र | 12/06/2019 |
| सूर्य | 24/05/2020 |
| चन्द्र | 24/12/2021 |
| मंगल | 01/02/2023 |
| राहु | 08/12/2025 |
| गुरु | 21/06/2028 |

### योगिनी

**मंगला 0वर्ष 7मा 10दि**
**भ्रामरी**

**31/01/2024**
**31/01/2028**

| | |
|---|---|
| भ्रामरी | 11/07/2024 |
| भद्रिका | 30/01/2025 |
| उल्का | 01/10/2025 |
| सिद्धा | 12/07/2026 |
| संकटा | 02/06/2027 |
| मंगला | 12/07/2027 |
| पिंगला | 01/10/2027 |
| धान्या | 31/01/2028 |

| ग्रह | व | अ | अंश | राशि | नक्षत्र | पद | स्वामी | अं. | स्थिति | षट्बल | चर | स्थिर | ग्रह तारा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| लग्न | | | 14:10:47 | मेष | भरणी | 1 | शुक्र | शुक्र | --- | 0:00 | | | |
| सूर्य | | | 06:31:47 | मिथु | मृगशिरा | 4 | मंगल | चंद्र | सम राशि | 1.56 | ज्ञाति | पितृ | अतिमित्र |
| चंद्र | | | 11:51:10 | मिथु | आर्द्रा | 2 | राहु | शनि | मित्र राशि | 1.35 | मातृ | मातृ | जन्म |
| मंगल | | | 15:36:36 | कन्या | हस्त | 2 | चंद्र | गुरु | शत्रु राशि | 1.26 | अमात्य | भ्रातृ | मित्र |
| बुध | | | 15:22:52 | वृष | रोहिणी | 2 | चंद्र | गुरु | मित्र राशि | 1.00 | भ्रातृ | ज्ञाति | मित्र |
| गुरु | व | | 06:52:52 | तुला | स्वाति | 1 | राहु | राहु | शत्रु राशि | 1.02 | पुत्र | धन | जन्म |
| शुक्र | | | 02:05:38 | वृष | कृतिका | 2 | सूर्य | गुरु | स्वराशि | 1.28 | कलत्र | कलत्र | वध |
| शनि | | | 21:53:59 | कन्या | हस्त | 4 | चंद्र | शुक्र | मित्र राशि | 1.34 | आत्मा | आयु | मित्र |
| राहु | व | | 19:43:29 | मिथु | आर्द्रा | 4 | राहु | मंगल | उच्च राशि | | --- | ज्ञान | जन्म |
| केतु | व | | 19:43:29 | धनु | पूर्वाषाढ़ा | 2 | शुक्र | राहु | उच्च राशि | | --- | मोक्ष | साधक |

## लग्न-चलित

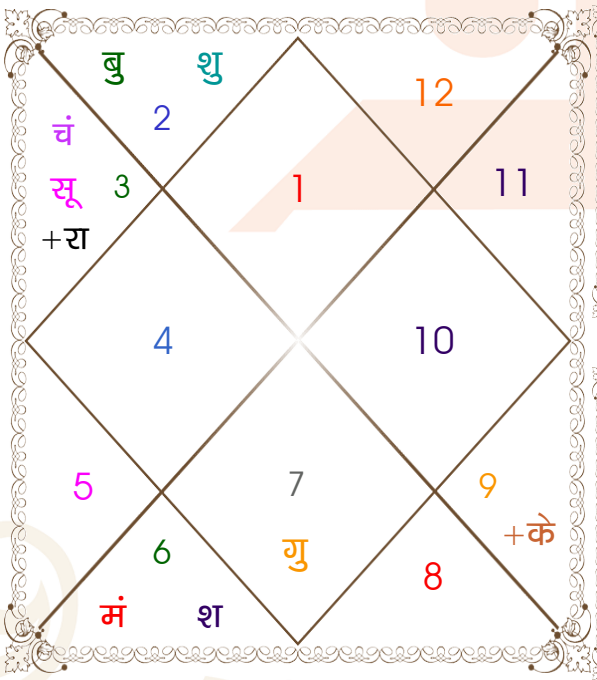


## चन्द्र कुंडली

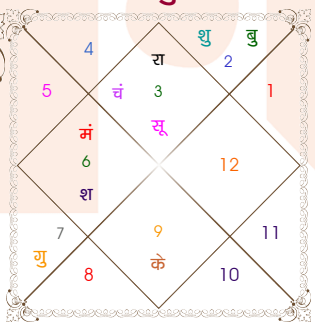


## नवमांश कुंडली

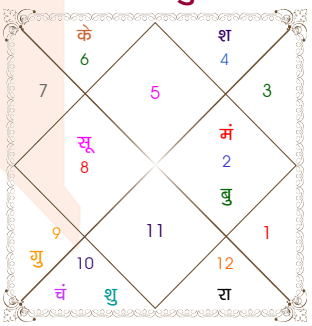


## सर्वाष्टकवर्ग

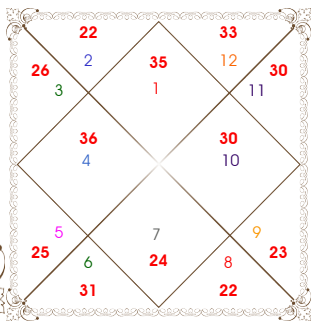


## दशमांश कुंडली

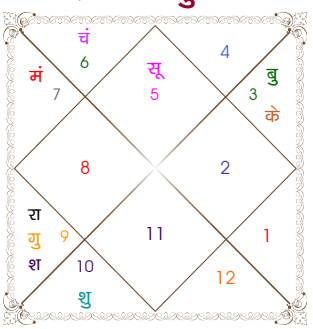

# नक्षत्रफल

आप आर्द्रा नक्षत्र के द्वितीय चरण में उत्पन्न हुए हैं। अतः आपकी राशि मिथुन तथा राशि स्वामी बुध होगा। नक्षत्रानुसार आपका शूद्र वर्ण, मार्जार वर्ग, आद्य नाड़ी, श्वान योनि तथा मनुष्य गण होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रथमाक्षर "घ" होगा।

आप अपने जीवन काल में व्यस्तता या अन्य कारणों से भोजन समय पर लेने में प्रायः असमर्थ रहेंगे। आप में शारीरिक लावण्यता भी अल्प मात्रा में ही विद्यमान रहेगी। आपके स्वभाव में क्रोध की प्रबलता रहेगी तथा छोटी छोटी बातों पर आप अनावश्यक क्रोध का प्रदर्शन करेंगे साथ ही समाज में अन्य जनों से उपकृत होने पर आप उनके उपकार को अल्प मात्रा में ही स्वीकार करेंगे। आप दया एवं करूणा के स्थान पर कठोरता का प्रदर्शन अधिक मात्रा में करेंगे। आप समीपस्थ सम्बन्धियों के प्रिय रहेंगे तथा उनसे आपको पूर्ण सहयोग तथा सहनुभूति प्राप्त होती रहेगी।

**क्षुधाधिको रूक्षशरीरकान्ति बन्धुप्रियः कोपयुतः कृतघ्नः।**
**प्रसूति काले च भवेत्किलार्द्रा दयाद्रचेता न भवेन्मनुष्यः।।**
**जातकाभरणम्**

अर्थात् आर्द्रा नक्षत्र में जन्म लेने वाला जातक क्षुधा से आतुर, रूक्ष शरीर वाला, कुपित रहने वाला, कृतघ्न तथा दया से हीन होता है।

आपमें चंचलता का भाव प्रबलरूप से विद्यमान रहेगा तथा आप किसी भी कार्य को स्थिर मन से करने में असमर्थ रहेंगे। साथ ही आप एक स्थान पर स्थिर नहीं रहेंगे तथा नित्य परिवर्तन की इच्छा करेंगे। आपके पास धनार्जन भी मध्यम रूप से ही होगा परन्तु शारीरिक बल से आप सर्वदा पूर्ण रहेंगे एवं अपने बाहुबल से समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करेंगे। आपकी शिक्षा भी मध्यम ही रहेगी परन्तु आचरण श्रेष्ठ रहेगा।

**कृतघ्नः गर्वितोहीनः नरो पापरतः शठः।**
**आर्द्रानक्षत्र सम्भूतो धनधान्य विवर्जितः।।**
**मानसागरी**

अर्थात् आर्द्रा नक्षत्र में उत्पन्न मनुष्य कृतध्न, गौरव विहीन, पापी तथा धन एवं धान्य से हमेशा हीन होता है।

आपके मन में अभिमान का भाव भी नित्य विद्यमान रहेगा साथ ही आपको अत्यन्त परिश्रम से महत्वपूर्ण उपलब्धियां प्राप्त होंगी। आपका सामान्य जीवन संघर्षमय रहेगा एवं परिश्रम पूवर्क आप जीविकार्जन करेंगे। अन्य लोगों के प्रति आपमें प्रेम का भाव ही रहेगा अतः सामाजिक जनों से आप सौहार्द अर्जित करने में समर्थ रहेंगे।

**शठगर्वितः कृतघ्नो हिंस्रः पापश्च रौद्रर्क्षे।**

बृहज्जातकम्

अर्थात् आर्द्रा नक्षत्र का जातक कुटिल हृदय वाला, अभिमानी, कृतघ्न, हिंसक प्रवृति वाला तथा पाप कर्म करने वाला होता है।

आपका जन्म ताम्रपाद में हुआ है। अतः जीवन में आप धन वैभव से प्रायः सुसम्पन्न ही रहेंगे तथा सुखपूर्वक जीवन में इसका उपभोग करेंगे। काव्यशास्त्र के प्रति भी आपकी रुचि रहेगी तथा इसमें आप परिश्रमपूर्वक ख्याति भी अर्जित करेंगे। भाइयों के प्रति आपके मन में पूर्ण स्नेह रहेगा तथा उनको आप हमेशा अपने ओर से प्रत्येक क्षेत्र में पूर्ण सहयोग प्रदान करते रहेंगे। सुन्दर वस्त्रों के प्रति आपके मन में आकर्षण रहेगा तथा इनको पहनने एवं संग्रह करने में आपकी पूर्ण रुचि रहेगी। आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा आप एक बलशाली पुरुष होंगे। साथ ही आप पराक्रम से भी युक्त रहेंगे एवं शौर्योचित कार्यों को करने के लिए सर्वदा उद्यत तथा तत्पर रहेंगे। आप सामान्यतया प्रसन्नचित रहेंगे। परन्तु आपका स्वभाव कृपण होगा। इसके अतिरिक्त आप एक विद्वान एवं सौभाग्यशाली पुरुष भी रहेंगे तथा सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक जीवन व्यतीत करेंगे।

आपका जन्म मिथुन राशि में हुआ है। अतः आप की आखें अल्प लालिमा से युक्त होकर काले रंग की होगी एवं बाल आपके घुंघराले होंगे। आपके शरीर के समस्त अवयव सुन्दर एवं पुष्ट रहेंगे। साथ ही आप उन्नत नासिका से भी युक्त रहेंगे। आप नाना प्रकार के शास्त्रों का परिश्रमपूर्वक अध्ययन करके उनका ज्ञान प्राप्त करने में सफल रहेंगे। दूतकार्य या सन्देशों के आदान प्रदान के कार्य में आपकी विशेष अभिरूचि रहेगी। आप अत्यन्त ही कुशाग्र बुद्धि वाले होंगे तथा इसी कुशाग्र बुद्धि के कारण सामने स्थित व्यक्ति की मन की बातों को जानने में सफल होंगे। आपका समाज में व्यवहार विनम्र तथा विनयशील रहेगा। अतः आपको उचित आदर प्राप्त होगा। आप अत्यन्त ही उत्तम वाणी से युक्त रहेंगे जिस की मधुरता एवं सरसता से सभी लोग आपकी वाणी की प्रशंसा करेंगे। हंसने तथा हंसाने का कार्य आपके लिए अत्यन्तानन्ददायी रहेगा। साथ ही आप गीत प्रेमी एवं नृत्य शास्त्र के ज्ञाता होंगे।

**स्त्रीलोलः सुरतोपचारकुशलताम्रेक्षणः शास्त्राविद्।**
**दूतः कुञ्चिचद् मूर्धजः पटुमति हास्योङ्गित द्यूतवित्।।**
**चार्वाङ्गाः प्रियवाक् प्रभक्षण रूचिर्गीतप्रियो नृत्यवित्।**
**क्लीबैर्याति रतिं समुन्नतश्चन्द्रे तृतीयर्क्षगे।।**

**बृहज्जातकम्**

आपकी नसें शरीर में पूर्णरूप से दृष्टिगोचर होंगी तथा हथेली में मत्स्याकार का चिन्ह भी हो सकता हैं। देखने में आप रूपवान तथा दर्शनीय होंगे। काव्य लेखन में आपकी नैसर्गिक अभिरूचि रहेगी तथा साहित्य से हार्दिक लगाव रहेगा। अतः आप सम्पूर्ण जीवन में पूर्ण रूप से भौतिक तथा सांसारिक सुखों का उपभोग करेंगे। लेकिन आप अपना अधिक समय विषय वासनाओं से युक्त सुख में लिप्त रहकर व्यतीत करेंगे। आप हमेशा भाग्यशाली प्राणी रहेंगे परन्तु स्त्री के वश में रहेंगे एवं उसके कहने से ही जीवन में अधिकांश कार्य सम्पन्न

करेंगे।

**उन्नासश्यामचक्षु सुरतविधिकला काव्यकृद्भोग भोगी।**
**हस्ते मत्स्याधिपाङ्को विषय सुखरतो बुद्धिदक्षः सिरालः।।**
**कान्तः सौभाग्य हास्य प्रियवचनयुतः स्त्रीजितौ व्यायताङ्गो।**
**याति क्लीबैश्च रतिकर्म संख्यशशिनि मिथुनगे मातृयुग्मप्रपुष्टः।।**
**सारावली**

आपकी आयु दीर्घायु होगी तथा आप दीर्घ समय तक जीवित रहेंगे। आपकी इच्छा भ्रमण या यात्रा करने की रहेगी तथा घर के अन्दर रहकर भी आप पूर्ण रूप से सन्तुष्ट एवं खुश रहेंगे।

**दीर्घायुः सुरतोपचारकुशलो हास्यप्रियो युग्मके।।**
**जातकपरिजातः**

आप अपने समाज में विशेषतया मित्र समाज में अत्याधिक लोकप्रिय रहेंगे। सभी लोग आपको उचित मान सम्मान तथा आदर प्रदान करेंगे। स्त्री वर्ग के आप अत्यन्त प्रिय होंगे तथा उनके मध्य सम्मान के पात्र समझे जाएंगे। आपके अन्दर चहुँमुखी प्रतिभा का वास रहेगा जिससे आप समाज में आदर तथा गौरव प्राप्त करेंगे।

**प्रियकरः करमत्स्ययुतोनरः सुरतसौख्यभरो युवतीप्रियः।**
**मिथुन राशि गतौहिम गौ भवेत्सुजनतजनताकृत गौरवः।।**
**जातकाभरणम्**

लेखन में या भाषण में आप श्लिष्ट भाषा का प्रयोग करेंगे। परन्तु अन्य जन इसे समझने में सफल रहेंगे। आप अपने बन्धुवर्ग तथा रिश्तेदारों एवं समाज के लोगों की सेवा तथा सहायता कार्य में हमेशा व्यस्त रहेंगे। आप पित तथा कफ मिश्रित प्रकृति के होंगे तथा उत्तम आचरण से युक्त रहेंगे।

**मृदुरूपचित्तगात्रः श्लिष्टविस्पष्टवाक्यः।**
**परजनहितकर्ता पंडितौ हास्य युक्तः।।**
**प्रकृति शुभचरित्रं श्लेष्मचित्त स्वभावो।**
**भवति मिथुन जातो गीतवाद्यानुरक्तः।।**
**जातक दीपिका**

आपके नेत्रों में चंचलता का बाहुल्य रहेगा। संगीत तथा नृत्य के प्रति आप अनुरक्त रहेंगे। आपका यश आपके धनैश्वर्य तथा सद्व्यवहार के कारण दूर दूर तक व्याप्त रहेगा। आप पूर्ण लम्बाई के व्यक्ति होंगे तथा भाषण की कला में भी कुशल होंगे। आपकी प्रकृति दृढ़निश्चयी होगी जिस कार्य को करने का मन में एक बार संकल्प ले लिया उसे पूर्ण करके ही छोडेंगे। आप न्यायवादी भी होंगे।

**मृदुवाक्यो लोलदृष्टिर्दयालु मैथुनप्रियः।**

**गान्धर्ववित् कासरोगी कीर्तिभोगी धनी गुणी।।**
**गौरोदीर्घः पटुर्वक्ता मेधावी च दृढव्रतः।**
**समर्थो न्यायवादी च जायते मिथुने जनः।।**
**मानसागरी**

आपका जन्म मनुष्य गण में हुआ है। अतः आप नित्य देवताओं तथा ब्राह्मणों की पूजार्चना करने वाले होंगे तथा इनमें आपकी अगाध श्रद्धा रहेगी। यदा कदा घमण्डी होने का अहसास भी आपकी बातों या कार्यकलापों से अन्य जनों को होगा। लेकिन आपका हृदय हमेशा दया तथा करूणा से परिपूर्ण रहेगा तथा आप दीन दुःखियों की यथा शक्ति सेवा तथा सहायता करेंगे। बल का आप में अभाव नहीं रहेगा इसकी पूर्णता बनी रहेगी। अपने कार्यों को आप कुशलता पूर्वक सम्पन्न करेंगे तथा आप एक से अधिक कार्यों में दक्ष होंगे। अपने निरन्तर अध्ययन तथा सत्संगतियों से आप ज्ञान प्राप्त करने में सफल होंगे। शरीर आपका सुन्दर एवं कान्ति युक्त रहेगा। साथ ही बहुत से लोग आपके आश्रय से सुख प्राप्त करेंगे।

आपको आजीवन धन मान तथा सम्मान एवं समस्त भौतिक तथा सांसारिक सुखों का अभाव नहीं रहेगा इनका आप सहर्ष उपभोग करेंगे। निशाने बाजी की कला में आप सर्वश्रेष्ठ रहेंगे तथा सम्पूर्ण नगर वासियों को आप अपने वश में रखेगे अर्थात् नगर की कोई गणमान्य हस्ती होंगे। आपका वर्ण भी गौरवर्ण से युक्त रहेगा तथा आखें भी दीर्घाकार होगी।

**देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।**
**प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।**
**जातकाभरणम्**

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

श्वान योनि में जन्म लेने के कारण आप हमेशा कार्य करने में व्यस्त रहेंगे। खाली बैठना आपको रूचिकर नहीं लगेगा तथा आपका मन हमेशा उत्साह से परिपूर्ण रहेगा। बहादुरी का गुण नैसर्गिक रूप से आपके अन्दर व्याप्त होगा। अतः आप निर्भीक होकर समस्तकार्य करेंगे। लेकिन कभी कभी अपने भाई बन्धुओं से आपसी कलह होता रहेगा। माता पिता से आपको पूर्ण स्नेह प्राप्त हौगा तथा निष्कपट एवं निस्वार्थ भावना से आजीवन उनकी सेवा में रत रहेंगे।

**सोद्यमः सुमहोत्साही शूरः स्वज्ञाति विग्रही।**
**मातृपित्रो सदाभक्तः श्वानयोनौसमुद्भवः।।**
**मानसागरी**

अर्थात् श्वान योनि में उत्पन्न जातक उद्यमी, उत्साह से परिपूर्ण, शूरवीर, अपने बन्धुवर्ग से द्वेष रखने वाला तथा माता पिता का भक्त होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति तृतीय भाव में है। अतः माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आपके प्रति उनका पूर्ण अपनत्व तथा स्नेह का भाव रहेगा एवं जीवन में सर्वप्रकार से आपकी सहायता करने के लिए वे नित्य तत्पर रहेंगी। साथ ही शक्ति, साहस एवं पराक्रम में आपकी वृद्धि में वे सदैव सहायक रहेंगी। इसके अतिरिक्त वे आपको समय समय पर अच्छा भोजन खिलाने के लिए भी तत्पर रहेंगी।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान तथा श्रद्धा का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा पालन के लिए प्रायः तत्पर रहेंगे। साथ ही यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे परन्तु इससे आपके मधुर संबंधों में कोई विशेष प्रभाव नहीं पडेगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में उनकी पूर्ण सेवा तथा आर्थिक सहायता तथा अन्य प्रकार का सहयोग करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार असुविधा नहीं होने देंगे। इसके लिए आप सर्वदा प्रयत्नशील रहेंगे।

आपके जन्म काल में सूर्य तृतीय भाव में स्थित है। अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे तथा उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा तथा यदा कदा ही शारीरिक अस्वस्थता रहेगी। साथ ही उनकी आयु भी उत्तम रहेगी। पिता से आप जीवन में समस्त शुभकार्यों में सहयोग प्राप्त करेंगे। साथ ही आप में शक्ति, साहस एवं पराक्रम बढाने के लिए वे नित्य यत्नशील रहेंगे। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा युक्त रहेंगे तथा अवसरानुकूल आपको उचित उपदेश तथा निर्देश भी देते रहेंगे।

आप भी उनके प्रति हार्दिक स्नेह एवं सम्मान का भाव रखेंगे तथा प्रायः उनकी आज्ञा का पालन करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध भी कुछ मतभेदों को छोडकर सामान्य रूप से मधुर ही रहेंगे। उनकी सेवा करना आप अपना कर्तव्य समझेंगे तथा जीवन में उनको पूर्ण आर्थिक तथा अन्य रूप से सहयोग प्रदान करते रहेंगे जिससे उन्हें कोई दुःख या कष्ट न हो। इस प्रकार आप एक दूसरे के लिए सामान्यतया शुभ ही समझे जाएंगे।

आपके जन्म समय में मंगल छठे भाव में है अतः भाईयों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर वे शारीरिक रूप से अस्वस्थ रहेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नही रहेगा एवं आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह एवं सम्मान का भाव रहेगा। जीवन में वे समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों तथा क्षेत्र में आपको अपना वांछित सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं अपनी ओर से आपको किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगे। साथ ही शत्रुवर्ग से भी वे आपकी नित्य रक्षा करने में तत्पर रहेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा एवं हमेशा उनको अपना सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपकी आपसी संबंध मधुर रहेंगे तथा यदा कदा सामान्य रूप से मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में क्षणिक तनाव की स्थिति रहेगी परन्तु कुछ समय के उपरान्त स्वतः ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप सुख दुःख में उनकी वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से भी सहयोग देंगे एवं यत्नपूर्वक उनकी भलाई करने में तत्पर रहेंगे।

आपके लिए आषाढ़ मास, द्वितीया, सप्तमी तथा द्वादशी तिथियां, चतुष्पाद करण, सोमवार, तृतीय प्रहर तथा कुम्भ राशिस्थ चन्द्रमा अनिष्ट फल देने वाले होंगे। अतः आप 15 जून से 14 जुलाई के मध्य 2,7,12 तिथियों में, स्वाती नक्षत्र, परिघयोग तथा चतुष्पाद करण में कोई भी शुभ कार्य, व्यापार प्रारम्भ, क्रय-विक्रय, नवगृहनिर्माण आदि कार्य सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी साथ ही सोमवार, तृतीय प्रहर तथा कुम्भ राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में अपने शरीर एवं स्वास्थ्य के प्रति पूर्ण सावधानी रखें।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक अशान्ति, व्यापार में हानि या नौकरी प्राप्ति में बाधाएं उत्पन्न हो रही हों तो ऐसे समय में आपको नित्य प्रातः एवं सायं काल श्री गणेश जी के दर्शन करने चाहिए बुधवार के ब्रत रखने चाहिए साथ ही पन्ना, हरा वस्त्र, मिश्री, घी, गेहूं आदि पदार्थों का भी श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अन्य अशुभ फलों में भी न्यूनता आएगी तथा शुभ फलों की प्राप्ति होगी। साथ ही बुध के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 17000 जप किसी विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए।

**ऊँ ब्रां ब्रीं ब्रों सः बुधाय नमः।**
**मंत्र- ऊँ ऐं स्त्रीं श्रीं बुधाय नमः।**